Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क़	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत्न	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्ग्रन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थै	उज्ज	उ ज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रन	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इ्ज़त	इ.ज्जत	स्रोह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ	लड्डू	लडू	द्वंद्व	बं द्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ड्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्नह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुरीं	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़म	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्जेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख़	ल्या हिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थिती।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्युह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दृष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शल्क बढा, नहीं बढेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रेम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्त्रस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेंट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोक्स सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी $\sqrt{\frac{3.5-5.6}{6}}$ किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गीरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छूट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदेभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झुल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing

पपकपवपवकवव पपखपवपवखवव पपगपवपवगवव पपघपवपवघवव पपङपवपवङवव पपचपवपवचवव पपछपवपवछवव पपजपवपवजवव पपझपवपवझवव पपञपवपवञवव *पपटपवपवटवव* पपठपवपवठवव पपडपवपवडवव पपढपवपवढवव पपणपवपवणवव पपतपवपवतवव पपथपवपवथवव पपदपवपवदवव पपधपवपवधवव पपनपवपवनवव **uuuuauauaa** पपफपवपवफवव पपबपवपवबवव पपभपवपवभवव पपमपवपवमवव पपयपवपवयवव पपरपवपवरवव पपलपवपवलवव पपळपवपवळवव **uuauauaaa** पपशपवपवशवव पपषपवपवषवव

पपसपवपवसवव
पपहपवपवहवव
पपकपवपवक्रवव
पपखपवपवखवव
पपग्रपवपवग्रवव
पपजपवपवज्ञवव
पपजपवपवज्ञवव
पपड्पवपवड्वव
पपढ्पवपवढ्वव
पपफपवपवक्रवव
पपफपवपवक्रवव
पपप्रपवपवयवव
पपअपवपवयवव
पपअपवपवस्वव
पपअपवपवक्रवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव पपअपवपवअवव पपॲपवपवॲवव पपइपवपवइवव पपर्डपवपवर्डवव पपउपवपवउवव पपऊपवपवऊवव पपएपवपवएवव पपऐपवपवऐवव पपऍपवपवऍवव पपऎपवपवऎवव पपआपवपवआवव पपओपवपवओवव पपऔपवपवऔवव पपऋपवपवऋवव पपऋपवपवऋवव पपल्पवपवल्वव पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव

पपस्रपवपवस्रवव

पपग्रपवपवग्रवव पपञ्चपवपवञ्चवव पपङ्रपवपवङ्गवव पपच्चपवपवच्चवव पपछूपवपवछूवव पपज्जपवपवज्जवव पपझपवपवझवव पपञ्जपवपवञ्जवव पपट्रपवपवट्रवव पपठूपवपवठूवव पपडूपवपवडूवव पपद्रपवपवद्रवव पपण्रपवपवण्रवव **uu**auauaaaa पपथ्रपवपवध्रवव पपद्रपवपवद्भवव पपध्रपवपवध्रवव पपन्नपवपवन्नवव **पपप्रपवपवप्रवव** पपफ्रपवपवफ्रवव पपब्रपवपवब्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपम्रपवपवम्रवव पपय्रपवपवय्रवव पपरूपवपवरूवव पपत्रपवपवत्रवव पपव्रपवपवव्रवव पपश्रपवपवश्रवव **ччячачаяаа** पपस्रपवपवस्रवव

पपह्रपवपवह्नवव पपळ्रपवपवळ्रवव पपक्षपवपवक्षवव पपञ्जपवपवञ्जवव

Conjunct spacing

पपक्तपवपवक्तवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपड्यपवपवड्यवव पपज्जपवपवज्जवव पपञ्थपवपवज्थवव पपज्यपवपवज्यवव पपज्सपवपवज्सवव पपछ्यपवपवछ्यवव पपट्यपवपवट्यवव पपठ्यपवपवठ्यवव पपड्यपवपवड्यवव पपढ्यपवपवढ्यवव पपट्टपवपवट्टवव पपट्रपवपवट्रवव पपठूपवपवठूवव पपडूपवपवडूवव पपड्टपवपवडूवव पपट्टपवपवट्टवव पपत्तपवपवत्तवव पपत्खपवपवत्खवव पपत्थपवपवत्थवव पपत्नपवपवत्नवव पपत्सपवपवत्सवव पपत्यपवपवत्यवव पपद्धपवपवद्धवव पपद्गपवपवद्गवव

पपद्वपवपवद्ववव पपद्धपवपवद्भवव पपद्रुपवपवद्भवव पपद्धपवपवद्धवव पपद्धापवपवद्धावव पपद्मपवपवद्मवव पपद्यपवपवद्यवव पपद्दपवपवद्दवव पपश्चपवयवश्चवव पपन्मपवपवन्मवव पपल्जपवपवल्जवव पपल्थपवपवल्थवव पपल्भपवपवल्भवव पपल्मपवपवल्मवव पपल्यपवपवल्यवव पपश्रपवपवश्रवव पपश्वपवपवश्ववव पपश्लपवपवश्लवव पपष्टपवपवष्टवव पपष्ट्रपवपवष्ट्रवव पपष्ठपवपवष्ठवव पपष्ठुपवपवष्ठुवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्मपवपवह्मवव पपह्यपवपवह्यवव पपह्लपवपवह्नवव पपह्नपवपवह्नवव

U/Uu variant s	spacing	पपपॉपपरॉपपकॉपप	Numeral spacing	पपन, पवन.	पपए, पवए.	पपद्ग, पवद्ग.
		पपपाँपपराँपपकाँपप		पपप, पवप.	पपऐ, पवऐ.	पपद्ब, पवद्ब.
पपहुपवपवहु		पपपौपपरौपपकौपप	००००१०१०११	पपफ, पवफ.	पपऍ, पवऍ.	पपद्भ, पवद्भ.
पपहूपवपवहू		पपपोंपपरोंपपकोंपप	००१०१०१११	पपब, पवब.	पपऎ, पवऎ.	पपद्वं, पवद्वं.
पपहृपवपवह		पपपॉॅंपपरॉॅंपपकॉॅंपप	००२०१०१२११	पपभ, पवभ.	पपआ, पवआ.	पपद्ध, पबद्ध.
पपहृपवपवह		पपपोपपरोपपकोपप	००३०१०१३११	पपम, पवम.	पपओं, पवओ.	पपह्नं, पवह्नं.
पपहुपवपवहु		पपपोंपपरोंपपकोंपप	००४०१०१४११	पपयं, पवय.	पपऔ, पवऔ.	पपष्ट, पवष्टे.
पपहूपवपवह	्वव	पपपाँपपराँपपकाँपप	००५०१०१५११	पपर, पवर.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ट्र, पवष्ट्र.
पपरुपवपवर	न्वव	पपपीपपरीपपकीपप	००६०१०१६११	पपल, पवल.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपरूपवपवर	रूवव	पपपौंपपरौंपपकौंपप	००७०१०१७११	पपळ, पवळ.	पपल, पवल.	पपष्ठ, पवष्ठु.
पपदुपवपवदु	ुवव	पपपौँपपरौँपपकौँपप	००८०१०१८११	पपव, पवव.	पपॡ, पवॡ.	पपह्न, पवह्न.
पपदूपवपवदृ	्वव	11111111111111111	००९०१०१९११	पपश, पवश.	1116/1416	पपह्न, पवह्न.
पपदृपवपवदृ	वव	பப்பப்பக்பபக்பப்		पपष, पवष.		
		पपपुपपरुपपकुपप	Letter-punct spacing		पपङ्र, पवङ्र.	पपह्न, पवह्न.
Vowel sign spa	acing	पपपूपपरूपपकूपप	गार गर	पपस, पवस.	पपछ्र, पवछ्र.	पपह्न, पवह्न.
पपपंपपरंपप	कंपप	पपपृपपरृपपकृपप	पपक, पवक.	पपह, पवह.	पपट्र, पवट्र.	חוום חום
पपपॅपपरॅपप		पपपृपपरॄपपकृपप	पपख, पवख.	पपक्र, पवक्र.	पपठ्र, पवठ्र.	पपहु, पवहु.
पपपँपपरँपप		पपपूपपरूपपकूपप	पपग, पवग.	पपख़, पवख़.	पपड्र, पवड्र.	पपहू, पवहू.
पपपँपपरँपप		पपपूपपरूपपकूपप	पपघ, पवघ.	पपग़, पवग़.	पपढू, पवढू.	पपह, पवह.
पपपैपपरेपप			पपङ, पवङ.	पपज़, पवज़.	पपद्गं, पवद्गं.	पपह्न, पवहू.
पपपेंपपरेंपप		पपर्पपपर्रपपर्कपप	पपच, पवच.	पपड़, पवड़.	पपर्, पवर्.	पपहु, पवहु.
पपपॅपपरॅंपप		पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपछ, पवछ.	पपढ़, पवढ़.	पपह, पवह.	पपहू, पवहू.
पपपपपरपप		पपर्पपपर्रिपपर्किपप	पपज, पवज.	पपफ़, पवफ़.	पपळू, पवळू.	पपरु, पवरु.
पपपपपर पप पपपेंपपरेंपप		पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपझ, पवझ.	पपय़, पवय़.	11-2/11-2	पपरू, पवरू.
•		पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपञ, पवञ.	पपक्ष, पवक्ष.	पपक्त, पवक्त.	पपदु, पवदु.
पपपॅंपपरॅंपप		पपर्पंपपर्रंपपर्केंपप	पपट, पवट.	पपज्ञ, पवज्ञ.		पपदू, पवदू.
पपपैपपरैपप		पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपठ, पवठ.		पपङ्ग, पवङ्ग.	पपदृ, पवदृ.
पपपैंपपरैंपप		पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपड, पवड.	पपअ, पवअ.	पपङ्ग, पवङ्ग.	
पपपेँपपरेँपप	कैंपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपढ, पवढ.	पपञ्जे, पवञ्जे.	पपट्ट, पवट्ट.	-
		पपर्पेंपपर्रेंपपर्केंपप	पपण, पवण.	पपॲ, पवॲ.	पपट्ठ, पवट्ठ.	पपक; पवक:
पपपापपराप	_		पपत, पवत.	पपइ, पवइ.	पपठ्ठ, पवठ्ठ.	पपख; पवख:
पपपिपपरिप	_	पपपऽपवपववऽवव	पपथं, पवथ.	पपई, पवई.	पपड्ढ, पवड्ढ.	पपग; पवग:
पपपीपपरीप		पप?पवपव?वव	पपद, पवद.	पपउ, पवउ.	पपड्ड, पवड्ड.	पपघ; पवघ:
पपपींपपरींप	पकींपप	पपपःपवपववःवव	पपध, पवध.	पपऊ, पवऊ.	पपढू, पवढू.	पपङ; पवङ:
~ ~	~		,		ਰਚਣ ਚਰਣ	

पपपींपपरींपपकींपप

पपद्ध, पवद्ध.

पपच; पवच:	पपड़; पवड़:	पपर्; पवरू:	पपहु; पवहु:	पपम। पवमः	पपओ। पवओः	पपद्द। पवद्दः
पपछ; पवछ:	पपढ़; पवढ़:	पपह्न; पवह्न:	पपहूँ; पवहूँ:	पपय। पवयः	पपऔ। पवऔः	पपष्ट। पवष्टः
पपज; पवज:	पपफ़; पवफ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपरु; पवरु:	पपर। पवरः	पपऋ। पवऋः	पपष्ट्र। पवष्ट्रः
पपझ; पवझ:	पपय़; पवय़:		पपरू; पवरू:	पपल। पवलः	पपऋ। पवऋः	पपष्ठ। पवष्ठः
पपञ; पवञ:	पपक्ष; पवक्ष:	पपक्त; पवक्त:	पपदु; पवदु:	पपळ। पवळः	पपल्। पवलः	पपष्ठ्र। पवष्ठः
पपट; पवट:	पपज्ञ; पवज्ञ:	पपङ्गः; पवङ्गः:	पपदूः, पवदूः	पपव। पववः	पपॡ। पवॡः	पपह्न। पवह्नः
पपठ; पवठ:		पपङ्ग; पवङ्ग:	पपदृः, पवदृः	पपश। पवशः		पपह्न। पवह्नः
पपड; पवड:	पपअ; पवअ:	पपट्ट; पवट्ट:		पपष। पवषः	गार्टी गर्दर	पपह्न। पवह्नः
पपढ; पवढ:	पपऄ; पवऄ:	पपट्टं; पवट्टं:	-	पपस। पवसः	पपङ्ग। पवङ्ग	पपह्व। पवह्नः
पपण; पवण:	पपॲ; पवॲ:	पपठ्ठ; पवठ्ठ:	पपक। पवकः	पपह। पवहः	पपछ्। पवछः	
पपत; पवत:	पपइ; पवइ:	पपड्ढः; पवड्ढः	पपख। पवखः	पपक्र। पवक्रः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः
पपथ; पवथ:	पपई; पवई:	पपड्डु; पवड्डु:	पपग। पवगः	पपख़। पवख़ः	पपठ्र। पवठ्रः	पपहूँ। पवहूँ:
पपद; पवदः	पपउ; पवउ:	पपढूँ; पवढूँ:	पपघ। पवघः	पपग्र। पवग्रः	पपड्र। पवड्रः	पपह्रं। पवहः
पपध; पवध:	पपऊ; पवऊ:	पपद्धः पवद्धः	पपङ। पवङः	पप्ज। पव्जः	पपद्र। पवद्रः	पपह्न। पवहः
पपन; पवन:	पपए; पवए:	पपद्ग; पवद्गः	पपच। पवचः	पपड़। पवड़ः	पपद्र। पवद्रः	पपहु। पवहुः
पपप; पवप:	पपऐ; पवऐ:	पपद्ध; पवद्धः	पपछ। पवछः	पपढ़। पवढ़ः	पपर्। पवरः	पपहूँ। पवहूँः
पपफ; पवफ:	पपऍ; पवऍ:	पपद्भः, पवद्भः	पपज। पवजः	पपफ़। पवफ़ः	पपह्न। पवहः	पपरु। पवरुः
पपब; पवब:	पपऎ; पवऎ:	पपद्व; पवद्व:	पपझ। पवझः	पपय्र। पवयः	पपळू। पवळ्रः	पपरू। पवरूः
पपभ; पवभ:	पपआ; पवआ:	पपद्धः पवद्धः	पपञ। पवञः	पपक्ष। पवक्षः	mari naas	पपदु। पवदुः
पपम; पवम:	पपओ; पवओ:	पपद्द; पवद्दः	पपट। पवटः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपक्त। पवक्तः	पपदू। पवदूः
पपय; पवय:	पपऔ; पवऔ:	पपष्ट; पवष्टः	पपठ। पवठः		पपङ्ग। पवङ्गः	पपदृ। पवदृः
पपर; पवर:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ट्र; पवष्ट्र:	पपड। पवडः	पपअ। पवअः	पपङ्ग। पवङ्गः	
पपल; पवल:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठः	पपढ। पवढः	पपञ्ज। पवञः	पपट्ट। पवट्टः	-
पपळ; पवळ:	पपलः; पवलः	पपष्ठु; पवष्ठु:	पपण। पवणः	पपॲ। पवॲः	पपट्ठ। पवट्ठः	पपक! पवक?
पपव; पवव:	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपत। पवतः	पपइ। पवइः	पपठ्ठ। पवठुः	पपख! पवख?
पपश; पवश:		पपह्न; पवह्न:	पपथ। पवथः	पपई। पवईः	पपड्ढ। पवड्ढः	पपग! पवग?
पपष; पवष:	muz, uzz,	पपह्न; पवह्नः	पपद। पवदः	पपउ। पवउः	पपडु। पवडुः	पपघ! पवघ?
पपस; पवस:	पपङ्गः, पवङ्गः	पपह्न; पवह्नः	पपध। पवधः	पपऊ। पवऊः	पपढु। पवढुः	पपङ! पवङ?
पपह; पवह:	पपछु; पवछु:		पपन। पवनः	पपए। पवएः	पपद्ध। पवद्धः	पपच! पवच?
पपकः; पवकः:	पपट्र; पवट्रः	पपहु; पवहु:	पपप। पवपः	पपऐ। पवऐः	पपद्ग। पवद्गः	पपछ! पवछ?
पपख़; पवख़:	पपठ्र; पवठ्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपफ। पवफः	पपऍ। पवऍः	पपद्व। पवद्वः	पपज! पवज?
पपग़; पवग़:	पपड्र; पवड्र:	पपहें; पवहें:	पपब। पवबः	पपऎ। पवऎः	पपद्भ। पवद्भः	पपझ! पवझ?
पपज़; पवज़:	पपढ्र; पवद्रः	पपहृ; पवहृः	पपभ। पवभः	पपआ। पवआः	पपद्व। पवद्वः	पपञ! पवञ?
	पपद्र; पवद्र:				पपद्ध। पवद्धः	

पपट! पवट?	पपज्ञ! पवज्ञ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदू! पवदू?	पपव-वपव	पपॡ-ॡपव	पपह्ल-ह्लपव
पपठ! पवठ?		पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदृ! पवदृ?	पपश-शपव		पपह्न-ह्नपव
पपड! पवड?	पपअ! पवअ?	पपट्ट! पवट्ट?		पपष-षपव	ਗਰਣ-ਵਰਤ	पपह्न-ह्नपव
पपढ! पवढ?	पपअे! पवअे?	पपट्ट! पवट्ट?	-	पपस-सपव	पपङ्र-ङ्रपव	पपह्न-ह्नपव
पपण! पवण?	पपॲ! पवॲ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपक-कपव	पपह-हपव	पपछ्र-छ्रपव	
पपत! पवत?	पपइ! पवइ?	पपड्ट! पवड्ट?	पपख-खपव	पपक़-क़पव	पपट्र-ट्रप व गण्ड रण्ड	पपहु-हुपव
पपथ! पवथ?	पपई! पवई?	पपड्ड! पवड्ड?	पपग-गपव	पपख़-ख़पव	पपठ्र-ठ्रपव	पपहूँ-हूँपव
पपद! पवद?	पपउ! पवउ?	पपढूं! पवढूं?	पपघ-घपव	पपग़-ग़पव	पपड्र-ड्रपव	पपह-ह्रंपव
पपध! पवध?	पपऊ! पवऊ?	पपद्धं! पवद्धं?	पपङ-ङपव	पप्ज-ज़पव	पपढ़-ढ़पव	पपहॄ-हॄपव
पपन! पवन?	पपए! पवए?	पपद्ग! पवद्ग?	पपच-चपव	पपड़-ड़पव	पपद्र-द्रपव	पपहु-हुपव
पपप! पवप?	पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपछ-छपव	पपढ़-ढ़पव	पपर्-रूपव	पपहूँ-हूँपव
पपफ! पवफ?	पपऍ! पवऍ?	पपद्भः! पवद्भः?	पपज-जपव	पपफ़-फ़पव	पपह-ह्रपव	पपरु-रुपव
पपब! पवब?	पपऎ! पवऎ?	पपद्व! पवद्व?	पपझ-झपव	पपय्र-य़पव	पपळू-ळूपव	पपरू-रूपव
पपभ! पवभ?	पपआ! पवआ?	पपद्ध! पबद्ध?	पपञ-अपव	पपक्ष-क्षपव		पपदु-दुपव
पपम! पवम?	पपओ! पवओ?	पपद्द! पवद्द?	पपट-टपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपक्त-क्त पव	पपदू-दूपव
पपय! पवय?	पपऔ! पवऔ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपठ-ठपव		पपङ्ग-ङ्गपव	पपट्टें-दूंपव
पपर! पवर?	पपऋ! पवऋ?	पपष्टु! पवष्टु?	पपड-डपव	पपअ-अपव	पपङ्ग-ङ्गपव	
पपल! पवल?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ठे! पवष्ठे?	पपढ-ढपव	पपऄ-ऄपव	पपट्ट-ट्टपव	-
पपळ! पवळ?	पपऌ! पवऌ?	पपष्टु! पवष्टु?	पपण-णपव	पपॲ-ॲपव	पपट्ठ-ट्ठपव	"कपवपक"
पपव! पवव?	पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपत-तपव	पपइ-इपव	पपठु-ठुपव	"खपवपख"
पपश! पवश?		पपह्नं! पवह्नं?	पपथ-थपव	पपई-ईपव	पपड्ट-ड्टपव	"गपवपग"
पपष! पवष?		पपह्नं! पवह्नं?	पपद-दपव	पपउ-उपव	पपड्ड-ड्डपव	"घपवपघ"
पपस! पवस?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपह्नं! पवह्नं?	पपध-धपव	पपऊ-ऊपव	पपढ़ु-ढ़ुपव	"ङपवपङ"
पपह! पवह?	पपछ्! पवछ्र?	•-	पपन-नपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्धपव	"चपवपच"
पपक़! पवक़?	पपट्र! पवट्र?	पपहु! पवहु?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ग-द्गपव ——	"छपवपछ"
पपख़! पवख़?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपफ-फपव	पपऍ-ऍवव	पपद्ध-द्वपव	"जपवपज"
पपग़! पवग़?	पपड्र! पवड्र?	पपहृं! पवहृं?	पपब-बपव	पपऎ-ऎपव	पपद्भ-द्भपव	"झपवपझ"
पप्ज! पव्ज?	पपद्र! पवद्र?	पपहूं! पवहूं?	पपभ-भपव	पपआ-आपव	पपद्घ-द्वपव	"ञपवपञ"
पपड़! पवड़?	पपद्र! पवद्र?	पपहुँ! पवहुँ?	पपम-मपव	पपओ-ओपव	पपद्ध-द्धपव	"टपवपट"
पपढ़! पवढ़?	पपर्! पवर्?	पपहूँ! पवहूँ?	पपय-यपव	पपऔ-औपव	पपद्द-द्दपव	"ठपवपठ"
पपफ़! पवफ़?	पपह्र! पवह्र?	पपरुं! पवरुं?	पपर-रपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट-ष्टपव	"डपवपड"
पपय़! पवय़?	पपळू! पवळू?	पपरू! पवरू?	पपल-लपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट्र-ष्ट्रपव	"ढपवपढ"
पपक्ष! पवक्ष?		पपदु! पवदु?	पपळ-ळपव	पपल-लपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"णपवपण"
	पपक्त! पवक्त?	9			पपष्ट्र-ष्ट्रपव	

"तपवपत"	"इपवपइ"	"ड्रुपवपड्ड"	Num-punct spacing
"थपवपथ"	"ईपवपई"	"ड्रुपवपड्ड"	गता ₹००० तगत
"दपवपद"	"उपवपउ"	"ढ्रुपवपढ्र"	पवप ₹१०१ वपव
"धपवपध"	"ऊपवपऊ"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹२०१ वपव
"नपवपन"	"एपवपए"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹३०१ वपव
"पपवपप"	"ऐपवपऐ"	"ढूपवपढू"	पवप ₹४०१ वपव
"फपवपफ"	"ऍपवपऍवव	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹५०१ वपव
"बपवपब"	"ऎपवपऎ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹६०१ वपव
"भपवपभ"	"आपवपआ"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹७०१ वपव
"मपवपम"	"ओपवपओ"	"द्दपवपद्द"	पवप ₹८०१ वपव
"यपवपय"	"ओपवपओ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹९०१ वपव
"रपवपर"	"ऋपवपऋ"	"ष्ट्रपवपष्ट्"	
"लपवपल"	"ऋपवपऋ"	"ष्ठपवपष्ठ"	०००,०१०,०११
"ळपवपळ"	"लपवपल"		००१,०१०,१११
		"ष्ठ्रपवपष्ठ्" "नामान"	००२,०१०,२११
"ayaya"	"ॡपवपॡ"	"ह्नपवपह्न" "नगरगर"	००३,०१०,३११
"शपवपश"	II II	"ह्नपवपह्न" "	००४,०१०,४११
"षपवपष" ""	"ङ्रपवपङ्र" ""	"ह्नपवपह्न" "	००५,०१०,५११
"सपवपस" 	"छ्रपवपछ्र"	"ह्नपवपह्न"	००६,०१०,६११
"हपवपह"	"ट्रपवपट्र"		००७,०१०,७११
"क्रपवपक"	"ठ्रपवपठ्र"	"हुपवपहु"	००८,०१०,८११
"ख़पवपख़"	"ड्रपवपड्र"	"हूपवपहू"	००९,०१०,९११
"ग़पवपग़"	"ढ्रपवपढ्र"	"ह्रपवपह्र"	001,010,111
"ज़पवपज़"	"द्रपवपद्र"	"हृपवपहृ"	000 000 000
"ड़पवपड़"	"रूपवपरू"	"हुपवपहु"	000.090.099
"ढ़पवपढ़"	"ह्रपवपह्र"	"हूपवपहूँ"	008.080.888
"फ़पवपफ़"	"ळ्रपवपळ्र"	"रुपवपरु"	007.080.788
"य़पवपय़"		"रूपवपरू"	003.080.388
"क्षपवपक्ष"	"क्तपवपक्त"	"दुपवपदु"	००४.०१०.४११
"ज्ञपवपज्ञ"	"ङ्गपवपङ्ग"	"दूपवपदू"	००५.०१०.५११
4	"ङ्गपवपङ्ग"	"दुपवपदु"	००६.०१०.६११
"अपवपअ"	# 19 1# "Zuauz"	22	००७.०१०.७११
"ऄपवपऄ"	"दूपवपदू"		००८.०१०.८११
"ऑपवपऑ"	•		००९.०१०.९११
77777	"ठुपवपठु"		

पपळिपपळिंपपळिंपप li Vowel sign - base पपविपपविंपपर्विपप पपकिपपकिंपपर्किपप पपशिपपशिंपपर्शिपप पपखिपपखिंपपर्खिपप पपषिपपषिंपपर्षिपप पपगिपपगिंपपर्गिपप पपसिपपसिंपपर्सिपप पपघिपपघिंपपर्घिपप पपहिपपहिंपपर्हिपप पपङ्गिपपङ्गिपपर्ङिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप पपचिपपचिंपपर्चिपप पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप पपछिपपछिंपपर्छिपप

पपजिपपजिंपपर्जिपप पपझिपपझिंपपर्झिपप पपञिपपञिंपपर्ञिपप पपटिपपटिंपपर्टिपप पपठिपपठिंपपर्ठिपप पपडिपपडिंपपर्डिपप पपढिपपढिंपपर्ढिपप पपणिपपणिंपपर्णिपप पपतिपपतिंपपर्तिपप पपथिपपथिंपपर्थिपप पपदिपपदिंपपर्दिपप पपधिपपधिंपपर्धिपप पपनिपपनिंपपर्निपप पपपिपपपिंपपर्पिपप पपफिपपफिंपपर्फिपप पपबिपपबिंपपर्बिपप पपभिपपभिंपपर्भिपप पपमिपपमिंपपर्मिपप पपयिपपयिंपपर्यिपप पपरिपपरिंपपरिंपप पपलिपपलिंपपर्लिपप

li Vowel sign	पपर्क्सिपप	पपर्ख्यिपप	पपिर्णिपप	पपर्च्टिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ठीपप	पपर्लिपप
clusters	पपर्क्हिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्छिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्लिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्ळिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्हिपप	पपर्ज्लिपप	पपर्वठ्यपप	पपर्त्यिपप
पपर्क्खिपप	पपक्किर्यपप	पपर्गिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्हिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्रिपप
पपर्क्गिपप	पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्बिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्किपप	पपर्ड्हिपप	पपर्लिपप
पपर्क्चिपप	पपर्क्त्यिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्विपप
पपर्क्छिपप	पपर्क्तिपप	पपर्ग्तिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ड्ड्यिपप	पपर्लिपप
पपर्क्जिपप	पपर्क्यिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झिपप	पपर्ढिृपप	पपर्क्यिपप
पपर्क्झिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ढीपप	पपर्क्रिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्निपप	पपर्घ्विपप	पपर्जिपप	पपर्झ्निपप	पपर्द्रिपप	पपर्स्सिपप
पपर्क्ठिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्बिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्यिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्त्र्ङ्जपप
पपर्क्डिपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्भिपप	पपिष्ट्र्यपप	पपर्च्चिपप	पपर्झिपप	पपर्व्ह्यिपप	पपर्ल्बिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्मिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्लिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्ल्बिपप
पपर्क्णिपप	पपर्क्प्रिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्र्कीपप	पपर्च्विपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्टीपप	पपर्त्यिपप
पपर्क्तिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्खिपप	पपर्च्सिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्ल्पिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्खिपप	पपर्ग्लिपप	पपङ्खींपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्त्प्लिपप
पपर्क्दिपप	पपर्ख्टिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्गिपप	पपर्च्मिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्हिपप	पपर्स्यिपप
पपर्क्निपप	पपर्ख्डिपप	पपर्ग्सिपप	पपर्झीपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्णिपप	पपर्त्स्निपप
पपर्क्पिपप	पपर्ख्णिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्तिपप	पपर्त्स्यिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्तिपप	पपर्ग्धिपप	पपङ्र्घीपप	पपर्छ्रिपप	पपञ्ज्यिपप	पपर्ण्यिपप	पपि्रस्विपप
पपर्क्बिपप	पपर्ख्दिपप	पपर्ग्निपप	पपर्ङ्चिपप	पपर्छ्विपप	पपर्ट्टिपप	पपर्ण्रिपप	पपत्स्न्र्यपप
पपर्क्भिपप	पपर्ख्निपप	पपग्भिर्यपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्टीपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्किपप
पपर्क्मिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्र्जीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्हिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्मिपप	पपर्ग्यिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्झिपप	पपर्ट्टीपप	पपर्ल्खिपप	पपर्थ्मिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपग्र्यिपप	पपर्झिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्स्थिपप	पपर्श्रिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्जिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्लिपप	पपर्थ्लिपप
पपर्क्शिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्निपप	पपर्द्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्थ्विपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्बिपप	पपट्वींपप	पपर्त्फिपप	पपर्श्सिपप
	पपर्ख्विपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्हिपप	पपर्त्बिपप	पपर्द्गिपप

पपर्द्धिपप	पपर्न्तिपप	पपर्म्थिपप	पपर्स्टिपप	पपम्म्यिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्जिपप
पपर्ह्पिप	पपर्स्थिपप	पपर्स्थिपप	पपर्प्तिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्टिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्दिपप	पपर्स्मिपप	पपर्म्दिपप	पपर्म्ब्यिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्ठिपप
पपर्द्विपप	पपर्स्थिपप	पपन्स्म्यपप	पपर्म्निपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्स्डिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्निपप	पपर्किपप	पपर्फ्पिपप	पपर्म्थिपप	पपर्विपप	पपर्स्हिपप
पपर्द्मिपप	पपर्न्पिपप	पपर्झिपप	पपर्म्मिपप	पपर्भ्भिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्तिपप
पपर्खिपप	पपर्न्फिपप	पपर्प्टिपप	पपर्म्यिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्थिपप
पपर्द्रिपप	पपर्न्बिपप	पपर्खिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्य्यिपप	पपि्र्पिपप	पपर्स्दिपप
पपर्द्विपप	पपर्भिपप	पपर्प्टीपप	पपर्फ्लिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्निपप
पपर्द्ध्यिपप	पपर्मिपप	पपर्खिपप	पपर्फ्शिपप	पपर्लिपप	पपल्क्यिपप	पपर्स्पिपप
पपर्द्विपप	पपर्न्यिपप	पपर्खिपप	पपर्भ्निपप	पपर्व्यिपप	पपर्स्थिपप	पपर्स्मिपप
पपर्द्ऱ्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्णिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्ल्ड्रिपप	पपर्स्बिपप
पपर्ध्किपप	पपर्ल्लिपप	पपर्प्तिपप	पपर्भ्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्मिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्विपप	पपर्थिपप	पपर्भ्लिपप	पपर्सिपप	पपर्श्खिपप	पपर्स्यिपप
पपर्ध्निपप	पपर्न्सिपप	पपर्प्दिपप	पपर्भ्विपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्रिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्हिपप	पपर्धिपप	पपर्भ्रिपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्छिपप	पपर्स्लिपप
पपर्ध्रिपप	पपर्स्थिपप	पपर्जिपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्टिपप	पपर्स्विपप
पपर्ध्लिपप	पपर्स्विपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्गिपप	पपर्श्तिपप	पपर्स्सिपप
पपर्ध्विपप	पपर्न्यिपप	पपर्फिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्निपप	पपर्स्म्यपप
पपर्ध्सिपप	पपन्स्टिपप	पपर्मिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्बिपप	पपर्स्क्रिपप
पपर्न्किपप	पपर्स्यिपप	पपर्चिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्श्मिपप	पपस्त्र्यपप
पपर्न्खिपप	पपर्ह्यिपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्ठिपप	पपर्श्यिपप	पपर्स्थियपप
पपर्न्चिपप	पपर्न्ज्यिपप	पपर्प्लिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्श्रिपप	पपस्मियपप
पपर्न्छिपप	पपन्क्सिपप	पपर्खिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्श्लिपप	पपस्त्विपप
पपर्न्जिपप	पपर्न्त्यिपप	पपर्ष्पिपप	पपर्म्रिपप	पपर्लिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्प्रिपप
पपर्स्झिपप	पपर्न्सिपप	पपर्सिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्शिपप	पपस्र्यिपप
पपर्न्टिपप	पपर्स्थिपप	पपर्ळिपप	पपर्म्विपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्लिपप
पपर्न्ठिपप	पपर्स्थिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्शिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्तिपप
पपर्न्डिपप	पपर्स्ट्रिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्न्हिपप	पपर्फ्जिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्मिपप

पपर्हम्यपप पपर्हिपप पपर्हिपप पपर्हिपप पपर्हिपप पपर्हिपप पपर्ळिपप पपर्ळिपप पपर्ळिपप पपर्ळिपप पपर्श्यिपप पपर्श्यिपप पपर्श्विपप पपर्श्विपप

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्डपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्धपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्खपपक्शपपक्सपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्छपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्डपपक्कपपक्यपप

पपक्कपपख्खपपखापपख्यपपद्धपपख्यप पद्धपपख्जपपद्धपपख्यपपद्धपपद्धपपद्धप पद्धपपख्यापपद्धपपख्यपपद्धपपख्यप पद्भपपख्यपपद्भपपद्धपपख्यप पद्मपपद्भपपद्भपपद्धपपद्धपपद्धाप पद्भपपद्भपपद्धपपद्भपपद्धपपद्धपप्य पद्धपपद्धपपद्भपपद्धपप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्छपपग्छपपग्चप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्दपपग्ठपपग्डप पग्दपपग्जपपग्कपपग्खपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्तपपग्लपपग्कपपग्खपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्दपपग्कपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्दपपग्कपपग्यपप

पपष्कपपष्खपपघ्मपपघ्मपपद्भपपघ्मप पघ्छपपघ्मपपद्भपपघ्मपपद्भपपघ्मप पद्भपपघ्मपपघ्मपपद्भपपध्मपपघ्मप पद्मपपघ्मपपघ्मपपद्भपपध्मपपघ्मप पद्मपपघ्मपपद्भपपद्भपपद्भपपघ्मप पद्मपपघ्मपपद्भपपद्भपपद्भपपद्भपपा पद्मपपद्भपपद्भपपद्भपपद्भपप पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपष्ठभपण्ठबप पछभपपछमपपछ्यपपछूपपछऱपपछलप पछळपपछळपपछखपपछशपपछसप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्यपपज्ङपपज्यप पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्टपपज्छप पज्ढपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्खपपज्भपपज्यप पज्जपपज्सपपज्कपपज्छपपज्खपपज्शप पज्थपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञापपज्जप पज्डपपज्सपपज्कपपज्यपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टप पड्ढपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्मपपड्मपपड्खपपड्भपपड्मपपड्यप पझपपड्सपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्नपपड्शप पड्मपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्सपपड्सपपड्सप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्डपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्ञपपञ्दपपञ्छप पञ्दपपञ्णपपञ्तपपञ्थपपञ्दपपञ्धपपञ्नप पञ्नपपञ्पपञ्कपपञ्खपपञ्भपपञ्यप पञ्चपपञ्सपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्जप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्जप पञ्डपपञ्दुपपञ्कपपञ्चपप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्डपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्घपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप पट्नपपट्पपट्लपपट्ळपपट्ञपपट्गप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गप पट्डपपट्डपपट्कपपट्यप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपपठ्डप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्मपठ्रपपठ्लपपठ्ळपपठ्खपपठ्गपपठ्ञप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्ढपपठ्फपपठ्यपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्रपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्खपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्लपपड्फपपड्खपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्षपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्ळपपढ्नपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढ्ढपपढ्फपपढ्यपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्चपपण्डपपण्चप पण्डपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्डपपण्डप पण्डपपण्णपपण्कपपण्खपपण्कपपण्डप पण्नपपण्पपण्कपपण्ळपपण्डपपण्डाप पण्नपपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्डाप पण्डपपण्डपपण्कपपण्डपपण्डपपण्जप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्यपपत्ङपपत्वपपत्छप पत्नपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्यपप्प पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्नपपत्डपपत्कपपत्सपपत्यपप

पश्कपपश्कपपश्चपप पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्कपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्कपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ढपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दपपद्धप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्खपपद्भपपद्मप पद्नपपद्नपपद्रपपद्कपपद्ळपपद्वप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्झपपद्ढपपद्कपपद्खप पद्गपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्यपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्छप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्यप पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपप्रपपन्रपपन्त्रप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्थपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्छप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्य पपन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्चपपन्त्रपपन्त्रप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन् पपप्कपपप्खपपपापपघ्यपपद्धपपप्चपपघ्छप पप्जपपद्भपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्पपप पप्तपपध्यपपद्धपपप्जपपप्जपपप्पपप्प पप्बपपध्भपपप्मपपप्यपपप्रपपप्रपपप्लपपप्कप पप्जपपप्बपपप्शपपप्कपपप्सपपप्कपपप्खप पप्गपप्जपपद्भपपद्भपप्कपप्यपप

पपफ्कपपफ्खपपफापपफ्यपपफ्डपपफ्चप पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टपपफ्ठपपफ्डप पफ्डपपफ्णपपफ्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्नप पफ्नपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्शपपफ्यप पफ्रपपफ्रपपफ्लपपफ्ळपपफ्लपपफ्शप पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्कपपफ्खपपफापफ्जप पफड्पपफ्डपपफ्कपपफ्सपप

पपक्कपपब्खपपब्गपपब्यपपव्हपपब्यपपब्छप पब्जपपब्झपपब्जपपब्टपपव्छपपव्हपपब्यपप पद्मपपब्धपपब्दपपब्धपपब्नपपब्नपपव्मप पद्मपपब्भपपव्मपप्रव्यपपब्रपपव्सपपव्सपपव्हप पद्मपप्रवापपद्भपपद्मपप्रव्यप प्रवापप्रज्ञपपद्मपपद्मपप्रव्यपप

पपभ्कपपभ्खपपभापपश्चपपभ्डपपभ्चपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्ञपपभ्दपपभ्ठपपभ्डपपभ्दप पभ्जपपभ्जपपभ्अपपभ्झपपभ्मपपभ्यपपभ्रप पभ्जपपभ्जपपभ्खपपभ्अपपभ्झपपभ्शपपभ्षप पभ्सपपभ्लपपभ्कपपभ्खपपभापपभ्जपपभ्डप पभ्सपपभ्लपपभ्जपपभ्खपपभापपभ्जपपभ्डप पभ्दपपभ्रमपभ्यपप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्डपपम्घपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्घपपम्डपपम्हप पम्जपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्रपपम्लप पम्कपपम्खपपम्भपपम्भपपम्थपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्झपपम्हप पम्कपपम्खपपम्भपपम्भप पम्यपप

पपय्कपपय्खपपयापपय्घपपय्हपपय्घपपय्छप पय्जपपय्झपपय्अपपय्दपपय्घपपय्हपपय्हप पय्जपपय्कपपय्भपपय्सपपय्यपप्रयपप्रयपय्लप पय्कपपय्छपपय्वपपय्शपपय्भपपय्सपपय्हप पय्कपपय्खपपयापप्रयपप्रयपप्रयपय्कप पय्कपपय्खपपयापप्रयपप्रयप्य

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्ढपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्कपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्वप पर्फपपर्यपप

पपक्कपपखपपजापपञ्चपपङ्कपपञ्चपपञ्छप पज्जपपञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पज्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपज्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चप पपत्कपपत्खपपत्यापपत्घपपत्ङपपत्त्वपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्डप पत्जपपत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नप पत्पपपत्कपपत्वपपत्थपपत्नपपत्नप पत्रपपत्कपपत्ञपपत्ञपपत्वपपत्थपपत्थप पत्सपपत्हपपत्कपपत्खपपत्गपपत्जपपत्डप पत्सपपत्हपपत्कपपत्खपपत्गपपत्जपपत्डप पत्डपपत्कपपत्यपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपळभपळलप पळभपपळमपपळथपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळकपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळग़पपळजपपळड़प पळढपपळफ़पपळयप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपळअपपळखप पळभपपळमपपळयपपळुपपळअपपळलप पळळपपळकपपळवपपळशपपळषप पळहपपळकपपळखपपळगपळजपपळडप पळहपपळकपपळखपप

पपळपपळपपळापपळ्यपपळ्पपळ्पपळप पळापपळ्सपळापपळ्पपळपपळपपळपपळपप पळापपळ्यपपळ्पपळापपञ्पपञ्मप पळापपळ्यपपळ्यपप्रत्रपपळ्पपळ्प पळ्यपळ्यपळापपळ्यपपळ्पपळ्प पळ्यपळापपळापपळ्यपपळ्पपळ्मप पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्ङपपश्चपपश्चप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप पश्णपपश्तपपश्थपपश्चपपश्चपपश्चप पश्पपपश्कपपश्चपपश्मपपश्यपपश्चप पश्रपपश्चपपश्कपपश्चपपश्चपपश्चप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्डपपश्कपपश्यपप

पपष्कपपष्खपपषापपष्घपपष्डपपष्वपपष्यप पष्जपपष्झपपष्ठापपष्यपपष्ठपपष्टपपष्मप पष्जपपष्भपपष्मपपष्यपपष्ठपपष्टपपष्मप पष्वपपष्भपपष्मपपष्यपपष्ठपपष्ट्रपपष्कप पष्वपपष्मपप्रज्ञपपष्टपपष्कपपष्ठप पष्वपपषापप्रज्ञपपष्टपपष्कपपष्ठप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्थपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्धपपस्नप पस्नपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्छपपस्वपपस्शप पस्थपपस्तपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गप पस्डपपस्हपपस्कपपस्यपप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्थपपस्ङपपस्चपपस्छप पस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डपपस्ढप पह्णपप्ततपपस्थपपस्दपपस्धपपह्लपपस्नपपस्पप पस्फपपस्बपपस्भपपह्लपपह्लपपस्पपह्लप पस्कपपस्खपपस्गपपस्जपपस्डपपस्लप पस्कपपस्खपपस्गपपस्जपपस्डपपस्लप पस्कपपस्खपपस्गपप

less common half-forms

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनपपइपप पइफपपइबपपइभपपइमपप पपइयपपइलपपइळप पइपपवपपइशपप पपइषपपइसपपइहपप

पपरक्रपपरखपपरगपपर्घ्यपपरङपपर्घ्यपपरछप परजपपरझपपरञ्जपपरटपपरठपपरडपपरखप परग्गपपरतपपरथपपरद्भपपर्धपपरनपपर्धप पर्ध्मपपरबपपरभपपरमपप पपर्यपपरलप परळपपरभपवपपरशपप पपरभपपरसपपरहपप

पपश्चपपश्खपपश्चापपश्चपपश्चपपश्चप पश्चापपश्चापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्चापपश्चापपश्चपपश्चपपश्चप पश्कपपश्चपपश्चापपश्चपप पपश्चपपश्चप पश्चपपश्चपपश्चापप पपश्चपपश्चपप पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रचपपक्रचप पक्रखपपक्रजपपक्रझपपक्रजपपक्रटपपक्रठप पक्रडपपक्रखपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रखपपक्रभपवपपक्रशप पपक्रयपपक्रसपपक्रहपप

पपरुकपपरुखपपरुगपपरुचपपरुङपपरुचप परुखपपरुजपपरुझपपरुञपपरुटपपरुठप परुडपपरुढपपरुणपपरुतपपरुथपपरुदपपरुधप परुनपपरुपपपरुफपपरुबपपरुभपपरुमप परुयपपरुलपपरुळपपरुपपवपपरुशप परुषपपरुसपपरुहपप

पपक्रपपख्रपपग्रापपग्रापपग्रापपग्रापपग्राप पग्रापग्रापग्रापग्रापग्रापग्राप पग्रापग्रापग्रापग्रापग्राप पग्रापग्रापग्रापग्रापग्राप पग्रापन्रापग्रापप पपग्रापग्रापग्राप पग्रापनपगरापप पपग्रापग्रापग्रापग्रापग्रापग्रापग्रापण

पपम्रमपम्खपपम्रापपम्मपम्झपपम्झपपम्खपपम्खप पम्जपपम्झपपम्भपपम्दपपम्खपपम्झपपम्झप पम्मपपम्भपपम्भपपम्मपप पपम्मपपम्भपपम्खप पम्मपपम्भपपम्भपपम्भपपम्झपपम्झपपम्भपपम्झप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्चपपन्छपपन्छपपन्छपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्दपपन्छपपन्दपपन्छप पन्जपपन्नपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नप पन्जपपन्त्वपपन्भपपन्मपपन्नपपन्नपपन्छप पन्जपवपपन्शपपन्भपपन्सपपन्हपप पपक्रमपक्रखपपक्रापपक्रयपपक्रपपक्रयपपक्रप पक्रापपक्रमपपक्रपपक्रपपक्रपपक्रपपक्रप पक्रापपक्रापपक्र्यपपक्रपपक्रपप पक्रमपपक्रापपक्रभपपक्रमपपक्रपप पक्रपपक्रपपवपपक्रापपक्रमपपक्रसपपक्रसप

पपद्रक्रपपद्भखपपद्भापपद्भयपपद्ग्रह्णपद्भयप पद्भछपपद्भजपपद्ग्रह्मपपद्भयपद्भटपपद्भयपद्भय पद्भटपपद्भगपपद्भतपपद्भयपद्भयपद्भयपद्भयप पद्भयपद्भक्षपपद्भयपद्भयपद्भयप पद्भलपपद्भक्षपपद्भयपपद्भयपद्भयपद्भय पद्भवपद्भयपद्भयपद्भयपद्भयपद्भयप

पपञ्कपपञ्खपपञ्जापपञ्चपपञ्छपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्जापपञ्जपपञ्भपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्मपपञ्चपपञ्भपपञ्मपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्मपवपपञ्शपप पपञ्मपपञ्चप पञ्जपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्यपपण्डपपण्चपपण्छप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णापपण्जपपण्शपपण्दपपण्धपपण्जपपण्णप पण्फपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्मपवपपण्शपप पपण्मपपण्सपपण्हपप

पपत्रमपत्रखपपत्रापपत्रमपत्रङपपत्रपपत्रपप पत्रपपत्रमपत्रमपत्रपपत्रपपत्रपपत्रपपत्रणप पत्रपपत्रमपपत्रपपत्रमपत्रमपत्रमपत्रबप पत्रभपपत्रमपप पपत्रयपपत्रमपत्रखप पत्रापपत्रमपपत्रमपपत्रसपप

पप्रक्रपप्रख्यप्रगपप्रयपप्रह्यपप्रख्यप्रध्यप प्रज्ञपप्रद्भपप्रश्चपप्रद्भपप्रद्भपप्रद्भप प्रग्णपप्रतपप्रथपप्रद्भपप्रधपप्रक्रपप्रभप प्रक्रपप्रखपप्रभपप्रमपप पप्रथपप्रलप प्रद्धपप्रभपवपप्रशपप पप्रथपप्रसप्पर्द्सप

पपन्त्रपपन्खपपनापपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रप पन्जपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रप पन्नपपन्तपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रप पन्त्रपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रपपन्त्रप वपपन्नपप पपन्त्रपपन्त्रपप

पप्रक्रपप्रख्रपप्रापप्रध्रपप्रङ्रपप्रच्रपप्रछप प्रज्ञपप्रद्भपप्रञ्ञपप्रद्रपप्रज्ञपप्रद्रपप्रणप प्रज्ञपप्रथ्रपप्रद्रपप्रध्रपप्रज्ञपप्रप्रपप्रक्रपप्रवप प्रभ्रपप्रमपप पप्रयपप्रज्ञपप्रज्ञपप्रप्रपय प्रशापप पप्रथ्रपप्रस्रपप्रह्रपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रशपपप्रङपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रपपप्रकपपप्रखपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रभपपप्रशपप पपप्रथपपप्रसपपप्रहपप